अलौकिक दिनचर्या

अमृतवेले के समय :– स्वयं भाग्य विधाता परमपिता शिव परमात्मा वरदान बांटने के लिए आये हैं, मैं वरदानों से पलने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूं...., मैं विजयी रतन हूं..., मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूं...., स्वयं को वरदानों से, शक्तियों से भरपूर महसूस करना.....।

स्नान के समय :– मेरा यह शरीर एक मंदिर है.., मैं आत्मा इस मंदिर में ईष्ट देव-देवी हूं.., इस मंदिर की सफाई कर रही हूं.., मैं एक शुद्ध आत्मा हूं..., पवित्र आत्मा हूं...।

मुरली सुनते समय :– स्वयं भगवान मुझे पढ़ा रहे हैं, मैं गॉडली स्टूडेन्ट हूं..., स्वयं भगवान मुझसे बात कर रहे हैं., मैं भाग्यवान आत्मा हूं... सभी परमपवित्र आत्माएं बैठी हैं।

भोजन के समय :– स्वयं भगवान मात-पिता बनकर मेरी पालना कर रहे हैं, मुझे यज्ञ से ब्रह्माभोजन खिला रहे हैं..., मैं पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मा हूं.....।

सेवा के समय :– मैं भगवान का राईट हैण्ड हूं...., स्वयं भगवान ने मुझे यज्ञ सेवा दी है, इस यज्ञ सेवा से मैं पुण्य का खाता जमा कर रहा हूं...., वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य ....., स्वयं भगवान मेरे साथ भी है तो साथी थी है....।

सम्बन्ध–सम्पर्क में आते समय :– सभी को मस्तक के बीच चमकती मणि के रूप में देखना....., यह ईश्वरीय कुल की आत्माएं हैं..... इनका भी कल्याण हो.....। आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करना....।

चलते–फिरते :– मैं डबल लाईट फरिश्ता हूं.., मैं लाइट हाउस माइट हाउस हूं.., स्वयं ऑलमाइटी अथॉरिटी मेरे सिर पर छत्रछाया के रूप में है, मैं छत्रछाया के अन्दर हूं....।

विश्राम के समय :– मैं इस सृष्टि पर अवतरित आत्मा हूं....., अब सेवा का पार्ट पूरा करके अपने वतन वापस जा रही हूं....., बापदादा की गोदी में विश्राम करना।

ओम् शान्ति